संपादकीय

समकालीन परिदृश्य में हमारे जीवन के प्रत्येक छड़ में मीडिया का हस्तक्षेप बढ़ता जा रहा है। जिसके अनेक कारण हैं। मीडिया के विभिन्न जनसंचार माध्यमों ने हमें सनसनीखेज ख़बरों का आदी बना दिया है। इतिहास, कला, संस्कृति, राजनीतिक घटना आदि सभी क्षेत्र में सनसनीखेज खबरों का ही बोलबाला है। इन खबरों के माध्यम से जनता के दिलों-दिमाग पर जोरदार हमला किया जाता है। इस हमले में अधिकाधिक सूचनाएं ऐसी होती हैं जो बाजार का विज्ञापन कर सकें। यह मीडिया का सांस्कृतिक बाजारवाद है, जो शोर के साथ अप्रासंगिक को भी प्रासंगिक बनाकर प्रस्तुत करने में लगा है। आज की मीडिया जनता को संप्रेषित ही नहीं कर रहा बल्कि भ्रमित भी कर रहा है। भूमंडलीकरण के इस युग में मीडिया का उद्देश्य बाजार को प्रोत्साहित करके पूंजीपतियों के लिए अधिकाधिक लाभ का द्वार खोलना है। इसके अनेक खतरे हैं। अगर ऐसे ही चलता रहा तो हमारी सभ्यता और संस्कृति, भाषा और साहित्य, नदियाँ, जंगल और पहाड़ का अस्तित्व मिट जायेगा और हम आभासी दुनिया का ढोल पीटने के लिए मजबूर होंगे। अभी हाल ही में घटी राजनैतिक और सामाजिक घटनाओं के अध्ययन और विश्लेषण के बाद यह यह बात और प्रमाणिक तौर पर कही जा सकती है।

आज सरकार और मीडिया का हस्तक्षेप आपके व्यक्तिगत जीवन को गहरे से प्रभावित कर रहा है। यह एक ऐसा समय है, जिसमें आपको आपके द्वारा किये गए हर गतिविधि का स्पष्टीकरण देना पड़ रहा है। जैसा कि जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय की घटना के बाद देशभक्त और देशद्रोही का, भारत माता की जय बोलने वाले और न वाले, का मुद्दा बनाकर मानवता के साथ खिलवाड़ किया जा रहा है। यह अनायास नहीं है, इसके पीछे एक गहरी और सोची-समझी चाल है। पिछले कुछ समय का अगर आप गहन अध्ययन करेंगे तो आपको सहज ही समझ में आ जायेगा कि यह किस प्रकार की राजनीति का गन्दा खेल खेला जा रहा है। दरअसल यह 'मुद्दा-विस्थापन' का खेल है। इसमें आप किसी एक मुद्दे पर गहन चिंतन और विमर्श कर ही नहीं सकते, यह स्वभाविक नहीं है आपके न चाहते हुए भी आप से करवा लिया जाता है। जिसमे मीडिया की अहम् भूमिका है। जो आपको हर समय सनसनीखेज होने के लिए मीठे जहर का डोज दे रहा है। इसको आप इस तरह से देख सकते हैं कि जबसे यह नयी सरकार बनी है आपने कितनी गहनता से साहित्य, कला और सिनेमा को पढ़ा और देखा है। मैं पुरे विस्वास के साथ कह सकता हूँ कि आपका ग्राफ गिरा है।

जगदीश्वर चतुर्वेदी से कुछ शब्द उधार लेते हुए यह कहना चाहूँगा कि- भूमंडलीकरण के इस युग में पूंजीवादी कम्पनियां अपने साम्राज्य विस्तार के लिए मीडिया में ज्यादा से ज्यादा निवेश करके मीडिया एवं सूचना तकनीकी का पूरा लाभ उठा रहीं हैं। खासकर पसंदीदा सरकार के गठन में गहरी दिलचस्पी लेकर राजनीतिक तनाव और टकराव के क्षेत्र में शासकवर्गों के साथ मिलकर हस्तक्षेप करना इनकी नियति बनती जा रही है। भूमंडलीकरण और बहुराष्ट्रीय मीडिया की युगलबंदी; स्थानीय, क्षेत्रीय और ग्लोबल अभिरूचियों, संस्कारों और संस्कृति के बीच सामंजस्य का काम कर रही है। मीडिया में इससे संबंधित इमेजों, प्रतीकों, मालों और लोगो का प्रसारण बढ़ा है। पावर का खेल फैला है। पावर के इस खेल के कारण नव साम्राज्यवाद का विस्तार हुआ है जो पूंजी पर आधारित है। पूंजी के इस विनिमय ने बाजार का निर्माण किया है, और बाजार, मीडिया तथा संस्कृति दोनों को प्रभावित कर रहा है। इस प्रकार यह आपकी सामुदायिकता को तोड़ने का प्रयास है। जिसमे वो काफी हद तक कामयाब भी हो रहे हैं। लेकिन साहित्य, कला और संस्कृति का सबसे बड़ा गुण यह है कि यह आपको भ्रमित होने और टूटने से बचाती है। यही इसकी शक्ति है, जो हर काल और समय में इसने अपने आपको आगे करके मानवता को बचाती आयी है, और आज भी इससे हमें यही उम्मीद और अपेक्षा है।

खैर ! पत्रिका के इस अंक के बारे में हम यह बताते चलें कि शोधार्थी रामचंद्र पाण्डेय ने दूधनाथ सिंह के द्वारा निराला के उपर लिखी गयी किताब 'निराला : आत्महन्ता आस्था' में की गयी उनकी स्थापना को बड़े ही सलीके से ख़ारिज

किया है। रामचंद्र पाण्डेय के ही शब्दों में –"यहाँ विद्वान आलोचक दूधनाथ सिंह से पूछा जा सकता है कि जब निराला ने अपनी इन लम्बी कविताओं में "दुहरे स्तर पर अपने को छुआ है" तो क्या कारण है कि आप उसे अपनी विद्वतापूर्ण व्याख्या से इकहरे ही संदर्भों में विश्लेषित करते हैं। यहाँ सिर्फ इतना निवेदन है कि अगर कविता से दुहरे अर्थों की प्रतीति हो रही हैं तो आलोचक का दायित्व है कि उसे दोनों ही संदर्भों में विश्लेषित करे। वस्तुतः रचना के वृहत्तर संदर्भों का व्याख्यान, उसके बहुविध विस्तीर्ण अर्थ-तंतुओं का उद्घाटन ही सच्ची आलोचना है।

एक दूसरे आलेख में भारती कोरी ने भक्ति आन्दोलन का एक परिदृश्य आज के संदर्भ में प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। हालांकि एक स्तर तक ही पहुँच पायी हैं। डॉ. मजीद मिया ने 'हिन्दी नाट्य यात्रा' को अपने नजरिये से देखने का प्रयास करते हुए अपना आलेख लिखा है। उन्हें अभी व्यापकता से गहराई में उतरने की कला सीखने की जरुरत है। 'मीडिया और सिनेमा' स्तम्भ के अंतर्गत प्रियंका कुमारी ने जरुर ज्वलंत मुद्दे को उठाया है। उनका आलेख ' चयनित हिन्दी फिल्मों में होमोसेक्शुअलिटी का रूपांकन : (दोस्ताना,गर्लफ्रेंड,फायर और पेज थ्री)' उनके सवाल और उम्मीद जायज हैं- "इस तरह हमने देखा कि हालांकि हिंदी सिनेमा में होमोसेक्शुलिटी के प्रति इतनी लंबी चुप्पी टूटी तो है, कुछ स्वीकर्यता इन रिश्तों और लोगों के लिए बनी तो है पर इसमें भी एक कनफ्लिक्ट है। अभी तक होमोसेक्शुअल मुद्दों के प्रति सवेदनशीलता और दिली स्वीकार्यता नहीं बन पाइ है। जिसके परिणाम स्वरूप इन रिश्तों को एक तरह के सांचों में गढ़ने की कोशिश की जाती है और इससे हिंदी सिनेमा जगत का होमोसेक्शुलिटी के प्रति पितृसत्तात्मक रुख का भी पता चलता है। फिर भी इन फिल्मों ने जिस चुप्पी को तोड़ा है वह भी महत्वपूर्ण है और आगे के लिए ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगा"।

शोध-पत्र स्तम्भ के अंतर्गत अभिषेक कुमार गौर का शोध-आलेख 'यह खेल ख़त्म करो कश्तियाँ बदलने का (आदिवासी विमर्श, सपने संघर्ष और वर्तमान समय)' में इन चंद पंक्तियों को पढ़ कर ही शोध विषय की समस्या का आकलन किया जा सकता है।

"सियाह रात नहीं लेती नाम ढ़लने का
यही वो वक्त है सूरज तेरे निकलने का
कहीं न सबको संमदर बहाकर ले जाए
ये खेल खत्म करो कश्तियाँ बदलने का "

'शैलीबद्धता और कहानी का रंगमंच विशेष संदर्भ : देवेंद्र राज अंकुर' पर अनीता गुप्ता ने सारगर्भित लेख लिखा है। इस बार दो कहानियों को पत्रिका में सम्मिलित किया गया है। पहली कहानी 'उनकी टांग' डॉ लवलेश दत्त की है। जिसमें पति-पत्नी के रिश्तों की कथा है, दूसरी कहानी 'मातृत्व' भी पति-पत्नी और पितृसत्तात्मक परिवार के बीच की कथा है, जिसमे कन्या भ्रूणहत्या की समस्या और मातृत्व सुख आकांक्षा रखने वाली एक जागरूक स्त्री की कथा है। इसको लिखा है अजय कुमार चौधरी ने। 'कवितायेँ' स्तम्भ में इस बार 'पारुल पंखुरी', 'पंकज बिहारी', अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री' संजय वर्मा 'दृष्टि',अमिताभ विक्रम, और दीपक शर्मा 'आत्रेय' की कविताओं को सम्मिलित किया गया है।

पुस्तक समीक्षा स्तम्भ में दो पुस्तकों की समीक्षा भी इस अंक में सम्मिलित हुई है। पहली पुस्तक है दिलीप मंडल की 'चौथा खम्भा प्राइवेट लिमिटेड' जिसकी समीक्षा अनूप कुमार ने की है। डॉ किशोरीशरण शर्मा ने अजय कुमार मिश्र 'अजयश्री' के कविता संग्रह 'शब्द कुछ कहते हैं' की समीक्षा प्रस्तुत की है। अंत में पीयूष गोयल ने अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाते हुए पांच ऐतिहासिक और पौराणिक पुस्तकों को पाँच तरीके से लिखा है।

अंततः यह यही कह सकता हूँ कि परिवर्तन पत्रिका धीरे-धीरे ही सहीं अपने उद्देश्य की तरफ बढती हुई दीख रही है। बाकी आपके बिना यह कहाँ संभव है। इसलिए आपकी प्रतिक्रिया और सहयोग की आकांक्षा है।

महेश सिंह